

८० व द्वा. मे पंच वेद

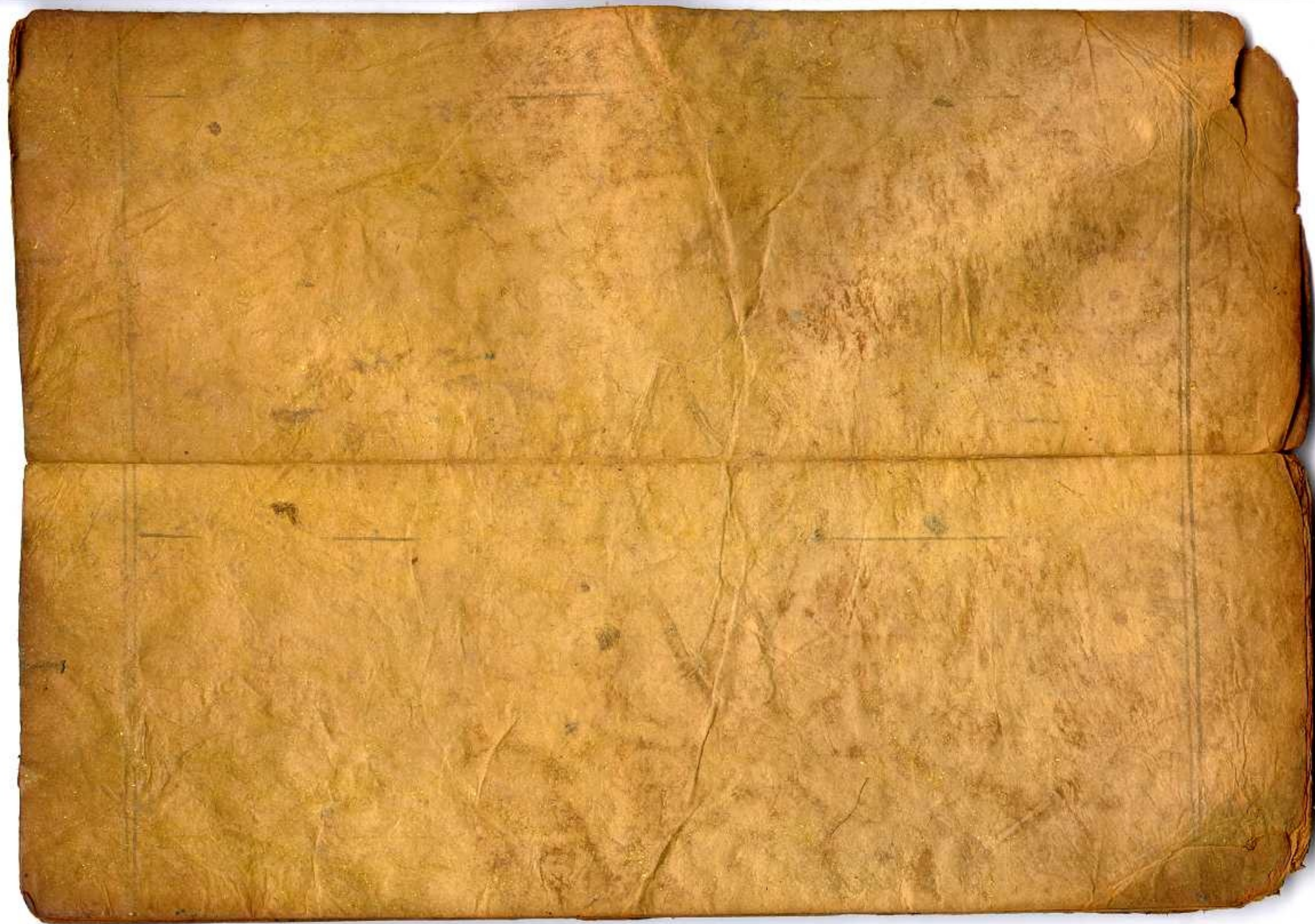
अ. म. म. म. म.
K. M. P. C. H. Y. E. S.

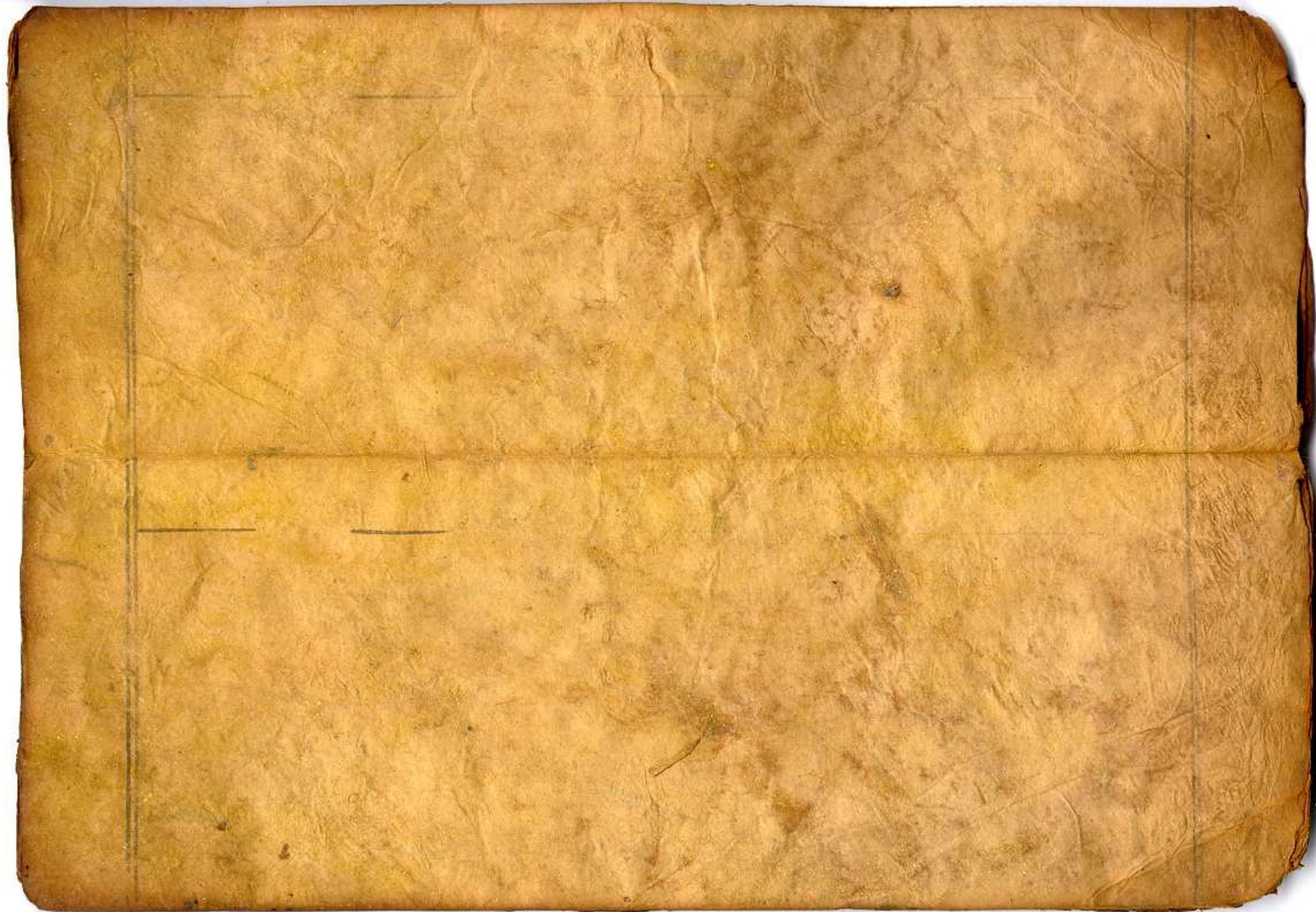
3150

८० क द्वा। मे पेंच वेद

अ. म. प. वे. म.
K. M. P. V. M.

3150





आम मन्त्रादिष्टमपुन मष्टाव श्रुत्यामिशा ॥ **विष्णु** श्रु कैवी
मौलि पुवा व साष्टपा येवो नि विमभन जा ७ मिथ्या श्रु क्क कायद
कन ० मवक्तु चय कुमा ७ १२ पावु म्माया विष्णु सखा ॥ **विष्णु** दिवा
वाविष्णु क विष्णु यथिया मन्त्रा विष्णु द्वावन क विष्णु न
उलादिष्ट मष्टाव श्रुत्यामिशा ॥ **विष्णु** श्रु कैवी
॥ **विष्णु** श्रु कैवी

वाचल गमना तुन गामि न कृत्वा च काद ह्वा वाचल गमना व कृत्वा मि
व कृत्वा वाचल गमना इय दयं निवे कृत्वा न को दना वा
प्रत्न गमना यय मा कृत्वा यी य कृत्वा म मि वे कृत्वा य **॥ १०८ ॥** यव
मा वा म मि य पु म य पु मा वा इ यी य कृत्वा म मा म् **॥ १०९ ॥** यव द न य
द म द ह न द मा र्वा वा म् यि कृत्वा मि **॥ ११० ॥** यव मि य व य म् म द य व य
मा ग म द व वा क र्वा य म् वा पु यि य वा पु यी ग म ला का यि ह य **॥ १११ ॥**

मि ह य द न म मि **॥ ११२ ॥** यव द वे ० कृत्वा क नि क र्वा ह ० ह म द यि
या य ता न म्मा म् म् ग म मि ता पु मि ता व नू ली पु व य व म्म ला **॥ ११३ ॥** यव द
नि ला क र्वा व नि मा य म्मा य व नि य य म्म मि व म्म **॥ ११४ ॥** यव द
हा य ह ० कृत्वा य ह ० द **॥ ११५ ॥** यव रि य वा र्वा य म्मा ना य मि न य
मि न य म्मा य म्म मि क र्वा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य
मि क र्वा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य म्मा य

महाराष्ट्र वाणिज्य विनियोग ॥ ३॥
आपणा नुसुन मय मय ॥ ४॥
आपणा विनियोग ॥ ५॥
आपणा विनियोग ॥ ६॥
आपणा विनियोग ॥ ७॥
आपणा विनियोग ॥ ८॥
आपणा विनियोग ॥ ९॥
आपणा विनियोग ॥ १०॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 कुरु कुरु मा ॥ २ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥ ३ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥ ४ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥ ५ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥ ६ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥ ७ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥ ८ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥ ९ ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥
 यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥ १० ॥ यत्किंचिद्विदुर्महर्षिः ॥

[illegible]

कल्याणस्य मदानाम ० हि हिमसदन्धसः ॥ ३२ ॥ अथो वृत्तः
रुहीनाम विगाऊ निरु हाम ॥ ३३ ॥ आभा रडाः कृतया य
नु विद्यगा वृद्धासा अयनी गो स उद्दिदः ॥ ३४ ॥ दवाना यथा सध मिदु ध अ सन्नः
प्रायुवान कि ता ना दिव दिव ॥ ३५ ॥ दवाना रडाः समति कुरु यगां द श ना
० ना मि ना नि वर्त ना म ॥ दवाना ० स द मूय म दि वा व यं द दानां आ मूः प्र मि न
नु ऊ व स ॥ ३६ ॥ गो न्यूर्व या मि वि दा कू म ह व यं र गं मि गुं म दि तिं द कि म

विधम् ॥ अथ मर्ग वृत्त ० मा म म वि ना स व स्व गी नः ॥ ३७ ॥
गन्ना वा ना म य पु व गुर व ऊं त न्मा ना यृ धि वी त स्थि ना थोः ॥ ग द्वा वा णः मा म स
ता म य पु व स द वि ना ए ए गं धृ क्त्वा यूर्व ॥ ३८ ॥ त मी ह नं ज ग न स्र स्थू म
म मि मि यं जि न्च म व स दू म ह व य म् ॥ पु म्वा ल म य थ व द साम स दू धे व कि
ता प्रा य न द दः स्व रु य ॥ ३९ ॥ स्व स्मि नः न्द्रा वृ द्वा वाः स्व स्मि नः पु म्वा वि
द व दः ॥ स्व स्मि न स्ता र्का अ वि रु न मिः स्व स्मि ना वृ द्वा मि र्द धा गु ॥ ४० ॥

मम दक्षममृगः दृष्टिमागनः दुर्लभावाभाविदथय्यनयः । अग्निजिह्वा
 नयः सवयवः सा विरह्यनादवा अवसागमन्निह ॥ ४० ॥ एतद्दक्षलिः दृष्ट्या
 मदवा एतं यद्वयमिहिर्यजग्राः । स्थिनेन रेकुट्टुवा ० ससूनृतिर्यममहिद
 वसितं यदायुः ॥ ४१ ॥ गगनिन्नुठावदा अन्तिदवा यग्राणि शुक्राजसन्मनूना
 युगाभायगुपिह ॥ एवमिमानामध्माभीविषणायुर्गताः ॥ ४२ ॥ अदिमिथो
 वक्तुमिहमदिगतासयितासयुगः । विरह्यदवा १ अदिगिः पञ्चकना १ अ

दि निर्गुणमदि निर्गुनित्वम् ॥ ४३ ॥ दीर्घायुस्त्वावलायदध्वसि सुप्रजात्वाय
सुवीर्याय यथाभावायः हानदः हानम् ॥ ४४ ॥ ओः हन्ति नन् विद् ० हन्ति
हृदि वी हन्ति मायः हन्ति नाय प्रयः हन्ति र्वनस्य तयः हन्ति विरहवदवाः
हन्ति र्विद् हन्तिः सर्व ० हन्तिः हन्ति नव हन्तिः सामा हन्ति नधि ॥ ४५ ॥

